CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री गणपति कृष्ण-आराधना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"समर्पित"

परम पूज्य माता जी श्रीमती गायत्री शर्मा

जिनकी प्रेरणा व आशीर्वाद से इस लघु पुस्तिका का संकलन सम्पूर्ण हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कलानिधि

इन्दिरा गान्धी
राष्ट्रीय कला केन्द्र

INDIRA GANDHI
NATIONAL CENTRE FOR
THE ARTS
JANPATH, NEW DELHI - 110001
GRAMS : KALASAMPADA
FAX : 91-11-23388280
website: www.ignca.nic.in

आमुख

एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्। इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगे युगे।। (श्रीमद्भागवत–1.3.28)

सभी अवतार उस परमेश्वर के अंश और कला स्वरूप हैं परन्तु श्रीकृष्ण तो साक्षात् परमेश्वर अर्थात् नारायण ही हैं। वे भगवान् श्रीकृष्ण प्रत्येक युग में दुष्ट दैत्यों से व्याकुल संसार को दुःखोन्मुक्त करते हैं। इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति – भक्ति जो भी मनुष्य करता है वे उसके सभी कष्ट दूर कर सुख प्रदान करते हैं। इसके साथ–साथ उनके प्रिय, सेवक तथा भक्तजनों का स्मरण भी भगवत् कृपा प्राप्ति का श्रेष्ठ उपाय है। इसलिए साथ में भगवान् श्री कृष्ण की प्रिया श्रीराधा (जो श्रीमद्भागवत में आराधना का स्वरूप हैं) की स्तुति भी उत्तम संयोग है। वैसे भी भगवान् श्रीकृष्ण श्रीराधे के बिना आधे हैं। इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीराधा दोनों की स्तुति – भक्ति सभी भक्तजनों के कल्याणकारक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी भी कार्य की निर्विघ्नता के लिए गणपति का स्मरण परमावश्यक होता है। इसलिए सर्व प्रथम भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीराधा के साथ – साथ भगवान् गणपति की स्तुति परम श्रेयस्कर है। इस प्रकार ये सभी देवता आप सभी भगवद्भक्तजनों का कल्याण करें ऐसी मेरी प्रार्थना हैं।

इस लघु पुस्तिका श्रीगणपति–कृष्ण–आराधना के संकलन का श्रेय श्री हेमन्तकुमार शर्मा जी को है जिन्होंने अपनी पूज्य माता जी की प्रेरणा से इन महत्त्वपूर्ण स्तोत्रों का बहुत मनोयोग से संग्रह कर जन कल्याणार्थ मुद्रण की व्यवस्था की है। अतः श्री शर्मा जी विशेष धन्यवाद के अधिकारी हैं।

गुरु पूर्णिमा
विक्रमी–2067

विद्वत्सेवकः–
मिश्रोपाह्व–गौडवंशोद्भव–
कीर्तिकान्तः

डॉ. कीर्तिकान्तः शर्मा
अनुसन्धानाधिकारी, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री गणेश वन्दना

वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

परं धाम परं ब्रह्म परेशं परमेश्वरम्।
विघ्ननिघ्नकरं शान्तं पुष्टं कान्तमनन्तकम्।।

सुरासुरेन्द्रैः सिद्धेन्द्रैः स्तुतं स्तौमि परात्परम्।
सुरपद्मदिनेशं च गणेशं मंगलायनम्।।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं विघ्नशोकहरं परम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्वविघ्नात् प्रमुच्यते।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संकष्टनाशनं गणेशस्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः

प्रणम्य शिरसा देवं गौरी पुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये।।1।।

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।2।।

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्।।3।।

नवमं भालचंद्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।4।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।।5।।

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।।6।।

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।7।।

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्यां भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।8।।

।। इति श्री नारद पुराणे संकष्टनाशनं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विघ्ननिवारकं सिद्धिविनायकस्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः

विघ्नेश विघ्नचयखण्डननामधेय श्रीशङ्करात्मज सुराधिपवन्द्यपाद।
दुर्गामहाव्रतफलाखिलमंङ्गलात्मन् विघ्नं ममापहर सिद्धिविनायक त्वम्।।1।।

सत्पद्मरागमणिवर्णशरीरकान्तिः श्रीसिद्धिबुद्धि-परिचर्चित-कुङ्कुमश्रीः।
दक्षस्तनेवलयितातिमनोज्ञशुण्डो विघ्नं ममापहर सिद्धिविनायक त्वम्।।2।।

पाशाङ्कुशाब्जपरशूंश्चदधच्चतुर्भिर्दोर्भिश्चशोणकुसुमस्रगुमाङ्गजातः।
सिन्दूरशोभितललाटबिद्युप्रकाशो विघ्नं ममापहर सिद्धिविनायक त्वम्।।3।।

कार्येषु विघ्नचयभीतविरञ्चिमुख्यैः सम्पूजितः सुरवरैरपि मोदकाद्यैः।
सर्वेषु च प्रथममेव सुरेषु पूज्यो विघ्नं ममापहर सिद्धिविनायक त्वम्।।4।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीघ्रञ्चनस्खलनतुङ्गरवोर्ध्वकण्ठस्थूलेन्दुरुद्रगणहासितदेवसङ्ग।
शूर्पश्रुतिश्च पृथुवर्तुलतुङ्गतुन्दो विघ्नं ममापहर सिद्धिविनायक त्वम्।।5।।

यज्ञोपवीतपदलंभितनागराजो मासादिपुण्यसदृशीकृतऋक्षराजः।
भक्ताभयप्रददयालयविघ्नराज, विघ्नं ममापहर सिद्धिविनायक त्वम्।।6।।

सद्रत्नसारततिराजितसत्किरीटः कौसुम्भचारुवसनद्वयमूर्जितश्रीः।
सर्वत्रमङ्गलकरस्मरणप्रतापो विघ्नं ममापहर सिद्धिविनायक त्वम्।।7।।

देवान्तकाद्यसुरभीतसुरार्तिहर्ताविज्ञानबोधनवरेणतपोपहर्ता।
आनन्दितत्रिभुवनेशकुमारवन्धो विघ्नं ममापहर सिद्धिविनायक त्वम्।।8।।

।। इति मौद्गलोक्तं विघ्ननिवारकं सिद्धिविनायकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री कृष्ण वन्दना

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे। तापत्रयविनाशाय श्री कृष्णाय वयं नुमः।
वासनात् वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्। सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तुते।।

श्री कृष्ण स्तुति

श्री कृष्ण चन्द्र कृपालु भजमन, नन्दनन्दन सुन्दरम्।
अशरण-शरण, भवभय-हरण, आनन्दघन राधावरम्।।

सिर मोरमुकुट विचित्र मणिमय, मकर कुण्डल धारिणम्।
मुख चन्द्र द्विति, नख चन्द्र द्विति, पुष्पित निकुंज-विहारिणम्।।

मुसकानि मुनि-मन-मोहिनी, चितवन चपल वपु नटवरम्।
बन माल ललित कपोल मृदु, अधरन मधुर मुरलीधरम्।।

वृषभानु नंदिनि वामदिशि, शोभित सुभग सिहासनम्।
ललितादि सखी जिन सेवहि, करि चंवर छत्र उपासनम्।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री राधा चालीसा

दोहा

श्री राधे वृषभानुजा, भक्तनि प्राणाधार।
वृन्दाविपिन बिहारिणी, प्रणवौं बारंबार।।
जैसो तैसो राबरो, कृष्ण प्रिया सुख धाम।
चरण शरण निजु दीजिये, सुन्दर सुखद ललाम।।

जय वृषभानु कुंवरि श्री श्यामा, कीरति नन्दिनि शोभा धामा।
नित्य बिहारिनि श्याम अधारा, अमित मोद मंगल दातारा।।

रास विलासिनी रस विस्तारिनि, सहचरि सुभग यूथ मन भावनि।
नित्य किशोरी राधा गोरी, श्याम प्राण धन अति जिय भोरी।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करुणा सागर हिय उमंगिनी, ललितादिक सखियन की संगिनी।
दिन कर कन्या कूल विहारिनि, कृष्ण प्राण प्रिय हिय हुलसावनि।।

नित्य श्याम तुम्हारौ गुण गावें, राधा राधा कहि हरषावें।
मुरली में नित नाम उचारे, तुम कारण लीला वपु धारें।।

प्रेम स्वरूपिणि अति सुकुमारी, श्याम प्रिया वृषभानु दुलारी।
नवल किशोरी अति छवि धामा, द्युति लघु लगै कौटि रति कामा।।

गौरांगी शशि निंदक बदना, सुभग चपल अनियारे नयना।
जावकयुत युग पंकज चरना, नूपुर धुनि प्रीतम मन हरना।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री राधा चालीसा

दोहा

श्री राधे वृषभानुजा, भक्तनि प्राणाधार।
वृन्दाविपिन बिहारिणी, प्रणवौं बारंबार।।
जैसो तैसो राबरो, कृष्ण प्रिया सुख धाम।
चरण शरण निजु दीजिये, सुन्दर सुखद ललाम।।

जय वृषभानु कुंवरि श्री श्यामा, कीरति नन्दिनि शोभा धामा।
नित्य बिहारिनि श्याम अधारा, अमित मोद मंगल दातारा।।

रास विलासिनी रस विस्तारिनि, सहचरि सुभग यूथ मन भावनि।
नित्य किशोरी राधा गोरी, श्याम प्राण धन अति जिय भोरी।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करुणा सागर हिय उमंगिनी, ललितादिक सखियन की संगिनी।
दिन कर कन्या कूल विहारिनि, कृष्ण प्राण प्रिय हिय हुलसावनि।।

नित्य श्याम तुम्हारौ गुण गावें, राधा राधा कहि हरषावें।
मुरली में नित नाम उचारे, तुम कारण लीला वपु धारें।।

प्रेम स्वरूपिणि अति सुकुमारी, श्याम प्रिया वृषभानु दुलारी।
नवल किशोरी अति छवि धामा, द्युति लघु लगै कौटि रति कामा।।

गौरांगी शशि निंदक बदना, सुभग चपल अनियारे नयना।
जावकयुत युग पंकज चरना, नूपुर धुनि प्रीतम मन हरना।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संतत सहचरि सेवा करहि, महामोद मंगल मन भरहि।
रसिकन जीवन प्राण अधारा, राधा नाम सकल सुख सारा।।

अगम अगोचर नित्य स्वरूपा, ध्यान धरत निशिदिन ब्रजभूपा।
उपजेउ जासु अंश गुण खानी, कोटिन उमा रमा ब्रह्माणी।।

नित्य धाम गौलोक बिहारिनि, जन रक्षक दुःख दोष नसावनि।
शिव अज मुनि सनकादिक नारद, पार न पाँइ शेष अरु सारद।।

राधा शुभ गुण रूप उजारी, निरखि प्रसन्न होत बनवारी।
ब्रज जीवन धन राधा रानी, महिमा अमित न जाय बखानी।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रीतम संग देही गलबाँही, बिहरत नित वृन्दावन माँही।
राधा कृष्ण कृष्ण है राधा, एक रूप दोउ प्रीति अगाधा।।

श्रीराधा मोहन मन हरनी, जन सुखदायक प्रफुलित बदनी।
कोटिक रूप धरें नन्द नन्दा, दर्श करन हित गोकुल चन्दा।।

रास केलि करि तुम्हें रिझावैं, मान करौं जब अति दुःख पावैं।
प्रफुलित होत दर्श जब पावैं, विविध भाँति नित विनय सुनावैं।।

वृन्दारण्य बिहारिनि श्यामा, नाम लेत पूरन सब कामा।
कोटिन यज्ञ तपस्या करहू, विविध नेम ब्रत हिय में धरेहू।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तऊ न श्याम भक्तहि अपनावैं, जब लगि राधा नाम न गावैं।
वृन्दाविपिन स्वामिनी राधा, लीला वपु तव अमिट अगाधा।।

स्वयं कृष्ण पावैं नहि पारा, और तुम्हें को जानन हारा।
श्रीराधा रस प्रीति अभेदा, सादर गान करत नित वेदा।।

राधा त्यागि कृष्ण को भजिहै, ते सपनेहु जग जलधि न तरिहै।
कीरति कुंवरि लाडिली राधा, सुमिरत सकल मिटहि भव बाधा।।

नाम अमंगल मूल नसावन, त्रिविद्य ताप हर हरि मन भावन।
राधा नाम लेई जो कोई, सहजहि दामोदर बसहोई।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राधा नाम परम सुखदाई, भजतहि कृपा करहि यदुराई।
यशुमतिनन्दन पीछे फिरिहैं, जो कोई राधा नाम सुमिरिहैं।।

रास बिहारिनि श्यामा प्यारी, करहु कृपा बरसाने वारी।
वृन्दावन है शरण तुम्हारी, जय जय जय वृषभानु दुलारी।।

दोहा

श्रीराधा रासेश्वरी, रसिकेश्वर घनश्याम।
करहुं निरन्तर वास मैं श्री वृन्दावन धाम।।

।। श्री राधा चालीसा सम्पूर्णम् ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणी,
प्रसन्नवक्त्रपंकजे निकुञ्जभूविलासिनी।
ब्रजेन्दभानुनन्दिनी ब्रजेन्द्रसूनुसंगते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

अशोकवृक्षवल्लरी वितानमण्डपस्थिते,
प्रवालज्वालपल्लव प्रभारुणाङ्घ्रिकोमले।
वारभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्प्रदालये,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

अनंगरंगमंगलप्रसंगभंगुरभ्रुवां,
सविभ्रमंसँसम्भ्रम दृगन्तवाणपातनैः।
निरन्तरंवशीकृतं प्रतीतनन्दनन्दने,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तडित्सुवर्णचम्पकप्रदीप्तगौरविग्रहे,
मुखप्रभापरास्तकोटिशारदेन्दुमण्डले।
विचित्रचित्रसंचरच्चकोरशावलोचने,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

मदोन्मदातियौवने प्रमोदमानमण्डिते,
प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते।
अनन्यधन्यकुञ्जराजकामकेलिकोविदे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

अशेषहावभावधीरहीरहारभूषिते,
प्रभूतशातकुम्भकुम्भकुम्भिकुम्भसुस्तनी।
प्रशस्तमंदहास्यचूर्णपूर्णसौख्यसागरे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृणालवालवल्लरी तरंगरंगदोर्लते,
लताग्रलास्यलोलनीललोचनावलोकने।
ललल्लुलन्मिन्मनोज्ञमुग्धमोहनाश्रिते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

सुवर्णमालिकाञ्चिते त्रिरेखकम्बुकण्ठगे,
त्रिसूत्रमंगलीगुणत्रिरत्नदीप्तिदीधिति।
सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

नितम्बबिम्बलम्बमान पुष्पमेखलागुणे,
प्रशस्तरत्नकिंकिणी कलापमध्यमञ्जुले।
करीन्द्रशुण्डदण्डिकावरोहसौभगोरुके,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेकमन्त्रनादमञ्जुनुपुरारवस्खलत्,
समाजराजहंसवंसनिक्वणातिगौरवे।
बिलोलहेमवल्लरी बिडम्बिचारुचङ्क्रमे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

अनन्तकोटिविष्णुलोकनम्रपद्मजार्चिते,
हिमाद्रिजापुलोमजाविञ्चिजावरप्रदे।
अपारसिद्धिवृद्धिदिग्ध सत्पदांगुलीनखे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।

मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी,
त्रिवेदभारतीश्वरी प्रमाणशासनेश्वरी।
रमेश्वरी क्षमेश्वरि प्रमोदकाननेश्वरी,
ब्रजेश्वरी ब्रजाधिपे श्रीराधिके नमोस्तुते।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतीदमद्भुतस्तवं निशम्यभानुनन्दिनीकरोतु संततं जनं कृपाकटाक्ष भाजनम्।
भवेत्तदैव संचितं त्रिरूपकर्मनाशनं, लभेत्तदाव्रजेन्द्रसूनुमण्डलप्रवेशनम्।।

राकायां च सिताष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धया,एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकःसुधीः।
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्तोन्नति साधकः, राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा।।

ऊरुमात्रे नाभिमात्रे हृन्मात्रे कंठमात्रके, राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत्साधकः शतम्।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् वांछितार्थफलं लभेत्, ऐश्वर्यं च लभेत्साक्षात्दृश पश्यति राधिकाम्।।

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम्, येन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं-श्यामसुन्दरम्।
नित्य लीला प्रवेशं च ददाति श्री ब्रजाधिपः, अतः परतरं प्रायः वैष्णवानां न विद्यते।।

।। श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री कृष्ण चालीसा

दोहा

बन्सी शोभित कर मधुर, नील जलज तनु श्याम।
अरुण अधर जनु बिम्ब फल, नयन कमल अभिराम।।
पूर्ण इन्दु अरविन्द मुख, पीताम्बर शुचि साज।
जय मन मोहन मदन छवि, कृष्ण चन्द्र महाराज।।

जय जय यदु नन्दन जगवन्दन। जय वसुदेव देवकी नन्दन।
जय यशोदा सुत नन्द दुलारे। जय प्रभु भक्तन के रखवाले।।

जय नट नागर, नाथ नथैया। कृष्ण कन्हैया धेनु चरैया।।
पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो। आओ दीनन कष्ट निवारो।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्सी मधुर अधर धरि टेरो। होवे पूर्ण मनोरथ मेरो।
आओ हरि पुनि माखन चाखो। आज लाज भगतन की राखो।।

गोल कपोल-चिबुक अरुणारे। मृदु मुस्कान मोहिनी डारे।
राजित राजिव नयन विशाला। मोर मुकुट वैजन्ती माला।।

कुण्डल श्रवण पीतपट आछे। करि किंकिणीहि काछिनी काछे।
नील जलज सुन्दर तनु सोहै। छवि लखि, सुरनर मुनि मन मोहै।।

मस्तक तिलक, अलक घुंघराले। आवो श्याम बांसुरी वाले।
करि पय पान, पूतनहि तारयो। अका बका कागासुर मारयो।।

मधुवन जलत अग्नि जब ज्वाला। भयै शीतल लखतहि नंदलाला।
जब सुरपति ब्रज चढयो रिसाई। मूसर धार वारि वर्षाई।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लखत-लखत ब्रज चहत बहायो। गोवर्धन नखधारि बचायो।।

लखि यशोदा मन भ्रम अधिकाई। मुख महं चौदह भुवन दिखाई।।

दुष्ट कंस अति ऊधम मचायो। कोटि कमल कह फूल मंगायो।

नाथि कालिया को तुम लीन्हे। चरण चिन्ह दे निर्भय कीन्हें।।

करि गोपिन संग रास विलासा। सबकी पूरण करि अभिलाषा।

अगणित महा असुर संहारियो। कंस कि केस पकड़ि दै मारयो।।

मातु पिता को बन्दि छुड़ाई। उग्रसैन कँह राज दिलाई।

महि से मृतक छहों सुत लायो। मातु देवकी शोक मिटायो।।

नरकासुर दल दैत्य संहारी। लाये षण दस सहस कुमारी।

देई भीम तृण चीर इशारा। जरासंध राक्षस देई मारा।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असुर बकासुर आदिक मारयो। भक्तन के सब कष्ट निवारयो।
दीन सुदामा के दुःख टारयो। तंदुल तीन मुट्ठि मुख डारयो।।

प्रेम के साग विदुर घर माँगे, दुर्योधन की मेवा त्यागे।।
लखि प्रेम तुहि महिमा भारी। नौमी श्याम दीनन हितकारी।।

भारत में पारथ रथ हांके। लिए चक्र कर बल नहि ताके।
निज गीता के ज्ञान सुनाये। भक्तन हृदय सुधा वर्षाये।।

भई मीरा ऐसी मतवाली। पी गई, विष बजा कर ताली।
राणा भेजा सांप पिटारी। शालिग्राम बने बनवारी।।

निज माया तुम विधिहिं दिखायो। उरकै संशय सकल मिटायो।
तब शत निन्दा करि तत्काला। जीवन मुक्त भयो शिशुपाला।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जबहि द्रोपदी टेर लगाई। दीनानाथ लाज अब जाई।

तुरतहि बसन बने नन्दलाला। बढ़े चीर धरि अरि मुंख काला।।

अंस अनन्त के नाथ कन्हैया। डूबत भँवर बचावत नैया।

'श्याम सुन्दर' अब आस तुम्हारी। दया दृष्टि कीजै बनवारी।।

नाथ सकल मम कुमति निवारो। क्षमहु बेगि अपराध हमारो।

खोलो पट अब दर्शन दीजे। बोलो कृष्ण कन्हैया की जय।।

दोहा

श्री कृष्ण चन्द्र के नाम से होत प्रफुल्लित गात।

जनघातक पातक टरत जनम सुफल होई जात।।

यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करे उर धारि।

अष्ट सिद्धि नवनिद्धि फल, लहै पदारथ चारि।।

।। इति श्रीकृष्ण चालीसा सम्पूर्णम् ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

।। श्री कृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र।।

भजेब्रजैकमण्डनं समस्त पापखण्डनं,
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं,
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम्।।

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं,
विधूत गोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं,
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम्।।

कदम्बसूनुकुण्डलं, सुचारु गण्डमण्डलं,
ब्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया,
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सदैव पादपंकजं मदीयमानसे निजं,
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं,
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम्।।

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं,
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदा सदा लसंगिनं,
दिने-दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्।।

गणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपावरं,
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं,
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम्।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं,
नमामिकुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं,
रसालवेणुगायकं नमामिकुञ्जनायकम्।।

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं,
नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्धरवहिनपायिनम्।
किशोरकान्तिरंजतिं दृगंजनं सुशोभितं,
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम्।।

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा,
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्,
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान्।।

।। श्रीकृष्णकृपाकटाक्ष स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हसितं मधुरं।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं, वसनं मधुरं वलितं मधुरं।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं, भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरं।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करणं मधुरं तरणं मधुरं, हरणं मधुरं रमणं मधुरं।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।

गुंजा मधुरा माला मधुरा, यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा, युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरं।
दुष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा, यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंत्रपुष्पांजलि

ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

ऊँ राजाधिराजाय प्रसह्म साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्मं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ऊँ स्वस्ति साम्राराज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं।।

राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपर्या ईस्यात्।।
सार्वभौमः सार्वायुष आंतादापरार्धात्।।

पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एकरालिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो
मरूतः परिवेष्टारो मरूत्तस्याऽवसन् ग्रह।।

।। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विष्णु स्तोत्र

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरणं सर्वलोकैकनाथम्।।

।।श्री शुभं भवतु।।

प्राप्त करने का स्थान :-
पं हेमन्त कुमार शर्मा
फोन-9268804920 / 9555569852
ई-मेल-librapiscean@gmail.com

गणेश गायत्री मंत्र

एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दंती प्रचोदयात्।।
एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दंती प्रचोदयात्।।
एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दंती प्रचोदयात्।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रद्धांजलि

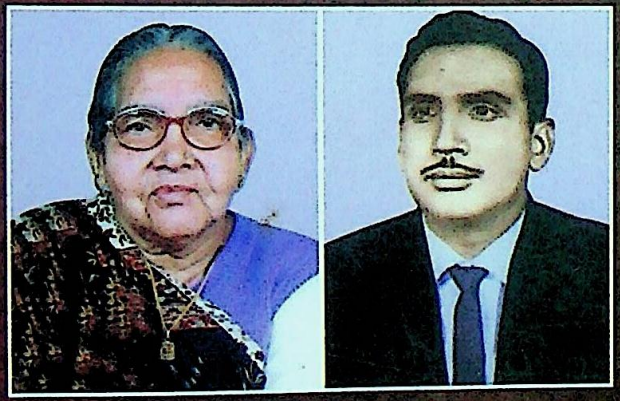

वैकुण्ठवासिनी नानी सरला देवी एवं वैकुण्ठवासी नाना मोहनलाल शर्मा
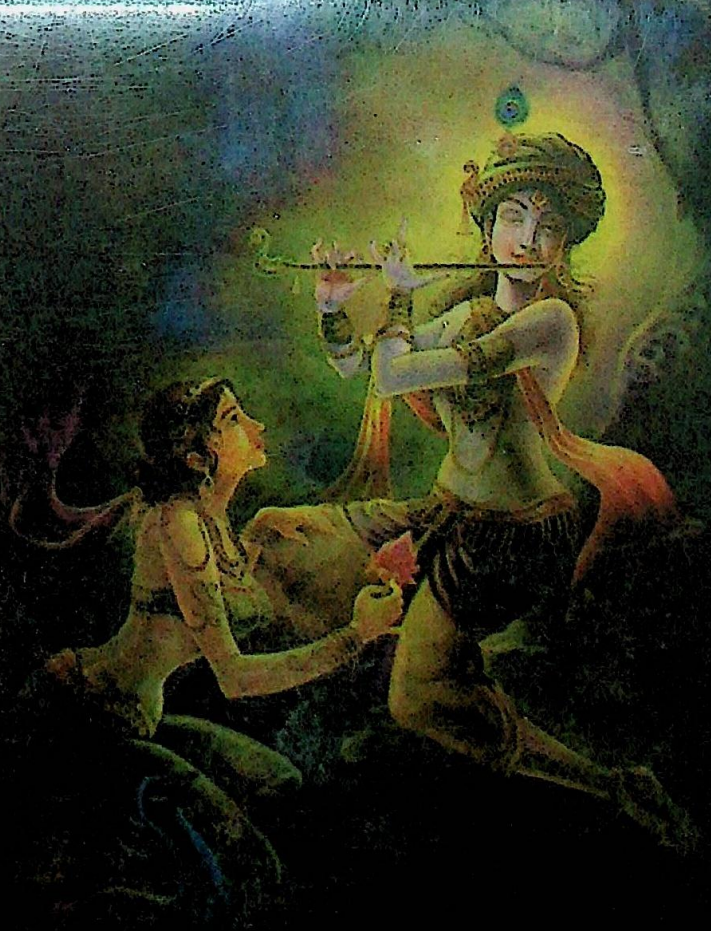
"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः।।"